**हिंदी-छत्तीसगढ़ी एवं संस्कृत**

**कक्षा - 3**

सत्र 2019-20

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  | DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें? |  |
| विकल्प 1: अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।  विकल्प 2: Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर  tap करें। |

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें

|  |
| --- |
| DIKSHA को लांच करें —> App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें—> उपयोगकर्ता Profile का चयन करें |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
| पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें। | मोबाइल को QR Code पर केन्द्रित करें। | सफल Scan के पश्चात QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी |

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय-वस्तु तक कैसे पहुँचें

|  |  |
| --- | --- |
| 1- QR Code के नीचे 6 अंकों का Alpha  Numeric Code दिया गया है। | ब्राउजर में diksha. gov.in/cg टाइप करें। |
| सर्च बार पर 6 डिजिट का QR  CODE टाइप करें। | प्राप्त विषय-वस्तु की सूची से चाही गई विषय-वस्तु पर क्लिक करें। |

**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण पारिषद छत्तीसगढ़, रायपुर**

**निःशुल्क वितरण हेतु**

**© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर**

प्रकाशन वर्ष - 2019

**मार्गदर्शन**

डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर

**संयोजक**

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

**मुख्य समन्वयक विषय समन्वयक**

श्री आर. के. वर्मा बी. आर. साहू, विद्या डांगे

**लेखक मण्डल**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **हिंदी** | **छत्तीसगढ़ी** | **संस्कृत** |
| डॉ. सी.एल.मिश्र, बी. आर. साहू,  डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, राजेन्द्र पाण्डेय,  गजानन्द प्रसाद देवांगन, श्रीमती उषा पवार, डॉ.(श्रीमती) रचना अजमेरा, अजय गुप्ता, विनय शरण सिंह,  दिनेश गौतम। | एम.एस.वर्मा, दिनेश गौतम, भूषण लाल परगनिहा, एम.जाकिर, रामकुमार वर्मा, रमेश यादव, श्रीमती तृप्ता कश्यप, शिवकुमार अंगारे, योगेन्द्र बेलचंदन | डॉ. सुरेश शर्मा,  बी.पी. तिवारी,(समन्वयक)  डॉ. कल्पना द्विवेदी,  ललित कुमार शर्मा,  डॉ. संध्यारानी शुक्ला,  डॉ. राजकुमार तिवारी |

**चित्रांकन**

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, समीर श्रीवास्तव, प्रशांत, गिरिधारी साहू

**आवरण पृष्ठ एवं ले-आउट**

रेखराज चौरागड़े

**प्रकाशक**

छŸाीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

**मुद्रक**

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ........................

**प्राक्कथन**

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर को सत्र 2002-03 में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने तथा उस पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना करने का दायित्व सौंपा गया। यह निर्णय भी लिया गया था कि नवरचित पाठ्यपुस्तका का दो वर्षो तक राज्य के विभिन्न अंचलों के चयनित विद्यालयों में क्षेत्र-परीक्षण किया जाएगा और फिर विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधान अध्यापकों, पालकों और विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन उपरांत राज्य के समस्त विद्यालयों हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार सत्र 2007-08 से कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक को राज्य के समस्त विद्यालयों में अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस पुस्तक को अंतिम रूप देते समय विषय के विशेषज्ञों द्वारा क्षेत्र के विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों, शिक्षकों और भाषा के अन्य विशेषज्ञों से चर्चा की गई और विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर, शिक्षकों तथा समुदाय से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक संशोधन, परिवर्तन किया गया है।

भाषा-शिक्षण का मूल उद्देश्य है-सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास करना। इस पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विधाओं-निबंध, कहानी कविता, पत्र, आत्मकथा, एकांकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा, यह हमारा विश्वास है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से **Energized Text Books** एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। **ETBs** का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो-वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, साहस, पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया गया है। पुस्तक को स्तरानुकूल और रोचक बनाने में राज्य तथा राज्य के बाहर के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान है। पाठों के चुनाव करने में हमें डॉ. हृदयकान्त दीवान विद्याभवन, उदयपुर एवं प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली का विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। परिषद् उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए आभारी है। लेखक मंडल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में जिन कवियों/लेखकों की रचनाएँ संकलित की गई हैं, हम उनके या उनके उŸाराधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

**शिक्षकों से कुछ बातें**

शिक्षक मित्रो! हिंदी कक्षा-3 आपके हाथ में है। यों तो इसका प्रायोगिक संस्करण वर्ष-2005-06 में ही प्रकाशित हो गया था, किंतु वह राज्य के मात्र दो सौ विद्यालयों में ही प्रचलन में था। क्षेत्र परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को आई कठिनाइयों, अपने राज्य के तथा राज्य के बाहर के शिक्षाविदों तथा राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक समिति के सुझावों के उपरांत प्रायोगिक संस्करण में आवश्यक सुधार करके प्रस्तुत संस्करण का स्वरूप प्रदान किया गया है। फलस्वरूप वर्तमान संस्करण में आपको काफी परिवर्तन दिखाई पड़ेगा।

इस संस्करण में हमने गतिविधियों पर काफी बल दिया है। प्रत्येक पाठ को पढ़कर विद्यार्थी परस्पर मौखिक प्रश्न पूछंे और उनके उत्तर दें। इससे विद्यार्थियों में प्रश्न गढ़ने की कला विकसित होगी और पाठों के प्रति उनकी समझ विकसित होगी। विद्यार्थियों के परस्पर प्रश्नोत्तर के बाद आप भी कुछ मौखिक प्रश्न उनसे पूछें। इससे आपको भी यह परीक्षण करने का अवसर मिलेगा कि विद्यार्थी पाठ को आत्मसात कर पाए हैं या नहीं।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न कई तरह के हैं। कुछ प्रश्न तो सीधे-सीधे सूचना आधारित प्रश्न हैं, जो सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं; कुछ प्रश्न कार्य-कारण संबंध वाले हैं तथा कुछ अन्य प्रश्न कल्पना व सृजनात्मकता वाले हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने में बच्चों को सोचना पडे़गा; अतः ऐसे प्रश्नों से वे अधिक सीख सकेंगे। बच्चों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार के प्रश्नांे के उत्तर यदि बच्चे अपनी भाषा में दें या लिखें तो अच्छा है।

विद्यार्थियों के उच्चारण पर भी आप ध्यान दें। विद्यार्थी बहुधा श-स; छ-क्ष, र, ऋ के उच्चारण में भेद नहीं कर पाते। इन वर्णों से बने शब्दों का अधिक-से-अधिक उच्चारण कराएँ। निरंतर अभ्यास से उच्चारण दोष अवश्य दूर होते है।

यही प्रक्रिया शब्दार्थ के संबंध में भी अपनाई गई है। शब्द का अर्थ विद्यार्थी की समझ में आ गया, यह तभी सही माना जाएगा, जब विद्यार्थी उस शब्द को वाक्य में प्रयोग कर सकेगा। बच्चे इन शब्दों का उपयेाग कर जितने वाक्य बता सकेंगे उतना ही अच्छा है।

उच्चारण दोष के साथ-ही-साथ विद्यार्थियों के वर्तनी संबंधी दोषों को दूर करने के लिए श्रुतिलेखन पर भी प्रस्तुत पुस्तक में बल दिया गया है। श्रुतिलेख की जाँच के लिए बच्चों को परस्पर एक दूसरे की अभ्यासपुस्तिका देखने को दें। ये अभ्यासपुस्तिकाएँ बच्चे आपके मार्गदर्शन में देखेंगे। इससे उन्हे शब्दों के शुद्ध और अशुद्ध रूप को पहचानने में सहायता मिलेगी। श्रुतिलेख के द्वारा बच्चों को सुधार लेख लिखने का भी अभ्यास होगा।

योग्यता-विस्तार के अंतर्गत कुछ ऐसे अभ्यास दिए गए हैं जिनमें बच्चों की सृजनशीलता का विकास होगा। ये अभ्यास अलग- अलग प्रकार के हैं, जैसे कहीं बच्चों से ढँढ़कर या पूछकर या सोचकर कुछ लिखने को कहा गया है। कहीं चित्र या टिकटें या पंक्तिया संग्रह करने को कहा गया है; कहीं किसी पक्षी या पशु के बिंदु-चित्र से उसका पूरा चित्र बनाने के लिए कहा गया है; कहीं किसी घटना का कक्षा में या बालसभा में वर्णन करने को कहा गया है। ऐसे क्रियाकलापों से बच्चों का

रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। समय-समय पर कक्षा या बालसभा में वादविवाद, अंत्याक्षरी, चित्र-निर्माण आदि का आयोजन करने से या उन्हें ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण करवाने और उस पर लेख लिखवाने के क्रियाकलापों से भी बच्चों की क्षमताओं का विकास होगा। आपको यह देखना है कि इन क्रियाकलापों में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता रहे। शिक्षण के क्षेत्र में पाठ्यपुस्तक, सहायक सामग्री तथा अन्य शैक्षिक गतिविधि कोई भी इतना सुझाव नहीं दे सकती जितना एक सुयोग्य शिक्षक दे सकता है। वह शिक्षक ही है जो, नीरस विषयवस्तु को सुगम और सरस बना देता है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक के शिक्षण में राज्य के सभी संबंधित शिक्षक अपनी इस प्रतिभा का सही उपयोग करेंगे।

प्रत्येक शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण-पद्धति को अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली रहती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि हमारे इन सुझावों पर आप विचार करेंगे और यदि इन सुझावों को उपयोगी समझें तो अवश्य अपनाएँगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

**विषय-सूची**

|  |
| --- |
| हिंदी  क्र. पाठ पृष्ठ |

हिन्दी

1. सीखो 1-4

2. सच्चा बालक 5-9

3. मुसवा रइथे जी (छत्तीसगढ़ी) 10-13

4. बंदर बाँट 14-19

5. मीठे बोल 20-22

6. कबूतर और मधुमक्खियाँ 23-27

7. चाँद का कुरता 28-32

8. चलव खेलबो (छत्तीसगढ़ी) 33-39

9. आदिमानव 40-44

10. चुहिया की शादी 45-49

11. दादा जी 50-54

12. हाथी 55-60

13. होनहार लइका नरेन्द्र (छत्तीसगढ़ी) 61-63

14. कौन जीता 64-67

15. मैं हूँ महानदी 68-72

16. अगर पेड़ भी चलते होते 73-76

17. सतवन्तिन गाय बहुला (छत्तीसगढ़ी) 77-83

18. जंगल में स्कूल 84-87

19. तेल का गिलास 88-92

20. अब बतलाओ 93-98

21. मैत्रीबाग (छत्तीसगढ़ी) 99-103

22. क्या तुम मेरी अम्मा हो? 104-108

23. कविता का कमाल 109-115

24. बालसभा 116-118

पुनरावृत्ति के प्रश्न 119-123

संस्कृत 124-136

राजू की कहानी